डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/2021-23
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 2 से 3, पृष्ठ सं. 112
प्रकाशन दिनांक : 1 से 1 प्रतिमाह

आर.एन.आई.क्र. : 38470/83
आई.एस.एस.एन. क्र. : 2456-7167

मूल्य 25/-

39 वाँ वर्ष

अक्षरा

फरवरी 2021

191

साहित्य की मासिकी

अक्षर

अंक-191 फरवरी 2021

सम्पादकीय

सबद निरन्तर

प्रसंगवश : कुछ सामयिक प्रकरण : **रमेशचन्द्र शाह** 8

आलेख

शालीन संवेदनशील व्यक्तित्व : बदरीविशाल पित्ती : **प्रयाग शुक्ल** 12

तथाकथित प्रगति की व्यथा-कथा : टूटते हुए : **कृष्ण गोपाल मिश्र** 15

भक्त कवि तुलसी : **उमा मिश्र** 19

मिजोरम : लोक जीवन और सांस्कृतिक संघर्ष : **वीरेन्द्र प्रताप** 22

इतिहास और साहित्य में तृतीयलिंगी : **निशा यादव** 27

रवीन्द्र कालिया के ए.बी.सी.डी. में सांस्कृतिक बोध : **भोमा राम** 31

तुलसी साहित्य और विदेशी रचनाकार : **ऋचा मिश्र** 35

रंग-विमर्श के प्रणेता : नेमिचन्द्र जैन : **राजेन्द्र कुमार सिंघवी** 41

रिश्तों की बुनावट और तकनीकी युग का अन्तर्बोध : शब्द पखेरू : **सन्तरा मीणा** 45

रघुवीर सहाय और दिनमान : **मनीषचन्द्र शुक्ल** 48

सांसदों के विशेषाधिकार : **हरीश चंद्र लखेड़ा** 52

महात्मा गाँधी और महामारी : **ज्योति यादव** 56

आत्मनिर्भर भारत और हिंदी : **विनोद कुमार मिश्र** 61

व्यक्तित्व

शालीन सुसंस्कृत व्यक्तित्व : मृदुला सिन्हा : **कृष्णा अग्निहोत्री** 64

अज्ञातों के अनवरत आराधक डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया : **श्यामसुंदर दुबे** 66

आत्मसंस्मरण

महाल की बेटी : **सूर्यबाला** 71

संस्मरण

राहों के दीये आँखों में लिये : **सुधा गुप्ता 'अमृता'** 76

तुलसी साहित्य और विदेशी रचनाकार

- ऋचा मिश्र

जन्म - 15 अगस्त 1962।
जन्मस्थान - लखनऊ (उ.प्र.)।
शिक्षा - एम.ए, पीएच.डी., डी लिट।
रचनाएँ - चार पुस्तकें प्रकाशित।

विश्व साहित्य के सौर मंडल के तुलसी प्रभा सूर्य हैं। विश्व के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों, जैसे शेक्सपियर, पुश्किन और टॉलस्टॉय के समतुल्य परिगणित किए जाने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरितमानस आज अखिल विश्व की निधि है। उसकी परिगणना विश्व के उत्कृष्टतम ग्रंथों में की जाती है। स्वान्तः सुखाय लिखी गई तुलसी की राम कथा ने संपूर्ण जनमानस को राम नाम के बीज मंत्र से अभिसिंचित कर एक ऐसी भावभूमि प्रदान की, जहाँ समरसता, सुख और सौमनस्य का साम्राज्य है। 'सुरसरि सम सब कँह हित होई' की सार्वजनीन और लोककल्याणमयी उद्भावना से प्रेरित हो गोस्वामी जी की अलौकिक कथा ने संपूर्ण विश्व को राममय कर दिया है। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं। तुलसी के राम भारतीय चेतना के पर्याय हैं, और उनका चरित शील, सौंदर्य, गरिमा और औदात्य का जीवंत प्रमाण।

तुलसी के जीवन, साहित्य और चिंतन का कोई भी पक्ष ग्रियर्सन की विवेचना से अछूता नहीं बचा है। मानस की लोकप्रियता और व्याप्ति को स्वीकारते हुए उन्होंने 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' के सन 1903 के जर्नल में कहा कि 'पूरी गंगा घाटी में यह ग्रंथ इतना लोकप्रिय है जितनी बाइबिल इंग्लैंड में भी नहीं।' इस प्रकार तुलसी को पाश्चात्य जगत से परिचित कराने और उनसे संबंधित तथ्य परक शोध का सूत्रपात करने का श्रेय ग्रियर्सन को दिया जाता है। भारतीय भाषाओं के अन्वेषक और पश्चिमी जगत में हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठापक के रूप में आज भी ग्रियर्सन का स्मरण किया जाता है। यद्यपि एक अन्य अंग्रेज विद्वान एच. एच. विल्सन ने 1828 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'दि रिलीजस सेक्ट्स ऑफ हिन्दूज़' में प्रकारान्तर से तुलसीदास और पुरुषोत्तम राम की लोकप्रियता को रेखांकित किया था, किंतु तुलसीदास पर पृथक रूप से मौलिक और सारगर्भित उत्पत्तियों को प्रस्तुत कर उन्हें अंतर्राष्ट्रीय जगत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय ग्रियर्सन को ही जाता है।

तुलसीदास पर जिस तथ्यपरक आलोचना का सूत्रपात डॉ. ग्रियर्सन ने किया उससे इंग्लैण्ड के अन्य साहित्यकार, इतिहासवेत्ता तथा भारतविद् उनकी अभूतपूर्व मेधा से प्रभावित हुए। उन्होंने तुलसी साहित्य के अंग्रेजी अनुवादों तथा शोधपरक निबंधों द्वारा उनके साहित्य को अंग्रेजी भाषी इंग्लैंड वासियों के लिए सुलभ बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया। इस शृंखला में पहला नाम डॉ. एफ. एस. ग्राउस का आता है। उन्होंने 'रामचरित मानस' का अंग्रेजी अनुवाद सन 1876 में प्रकाशित किया। यह मानस का